पिलीयाँ

पिलीयाँ रोग का अर्थ ?

पिलीया यानी आँखे एवं त्वचा का पीला पडना मानव शरीर मे बिलुरुबिन का प्रमाण बढने से यह दिखाई देता है ।जब यकृत द्वारा लाल रक्तपेशीयोंको तोडा जाता है, तब बिलुरुबिन यह पदार्थ का निर्माण होता है । पिलीया यह यकृत , पॅनक्रिया, स्वादकेंद्र, पित्ताशय की विभिन्न समस्याओंके लक्षण है । जेनेटिक दोष ऐसेटोमाईनोफेन अथवा अल्कोहोल के अधिक सेवन से पिलियाँ होता है ।

कारण -

1. यकृत से संबंधित रोग हेपाटायटिस A, B,एवं C
2. अल्कोहोल के कारण यकृत पर परिणाम
3. पित्त निकालने वाली नलिका मे अडथडे अथवा टयूमर
4. दवाईयों अथवा वनस्पती के कारण विषबाधा
5. समयपूर्व जनम होना
6. हिपाटायटिस जन्म व्यक्ती से संभोग करना
7. जन्म से ही घाव के लक्षण दिखाई देना

लक्षण विशेष-

- चायरंगी पिशाब होना
- पिले एवं खाकी रंग का शौच होना
- खुजली होना
- खोयापन
- थकावट एवं वजन कम होना
- नसे एवं सांधे दुखना
- जी मचलना, उल्टी होना, पेट दुखना

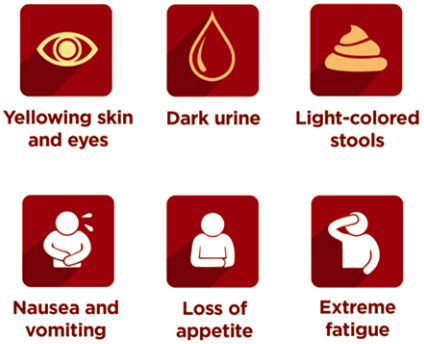

आवश्यक जाँच-

- मूत्र जाँच
- यकृत कार्य एवं रकत जाँच
- अल्ट्रासाऊंड स्कॅन

सीटी स्कॅन
एमआरआय स्कॅन

उपचार ईलाज-

- बिलुरुबिन का स्तर कम करना
- एवं खुजली कम करने करने की दवाई देना
- संसर्गमुक्त पिलीयाँ की अथवा अत्यंत गंभीर परिस्थितीयेांमे उपचार के लिए प्रतिजैविक (Antibiotics) दिए जाते है
- लाल रक्तपेशियोंके टूटनेसे एवं पंडुरोग अथवा अधिक रक्तस्त्राव की स्थिती मे रोगी को रक्त चढाया जाता है ।
- पिलीयाँ से संबंधित विभिन्न दवाईयाँ
- शस्त्रक्रिया की भी आवश्यकता कुछ गंभीर परिस्थिती मे हो सकती है । पित्त मे पथरी होने से शस्त्रक्रिया आवश्यक होती है ।

रुग्ण समुपदेशन-

- सूचना के अनुरुप अधिक द्रव्यपदार्थोंका सेवन करे । द्रव्यपदार्थोंके कारण पानी का स्तर बना रहता है जिससे पिशाब होकर मूत्रपिंड (Kidneys) को कोई समस्या नही होती ।
- कम वसायुक्त अन्न का सेवन करे, कम घटक वाले फल , सब्जियाँ , कडधान्य , मूग, बरबटी, रोटी, भाकरी,कम वसायुक्त दुग्धपदार्थ, फल्लियाँ, मछली, शीघ्र पचनयुक्त अन्नपदार्थ का सेवन पिलीयाँ के लक्षण कम करता है ।
- मद्यपान, शराब का सेवन ना करे अल्कोहोल यकृत का हानी पहुँचाता है । एवं परिस्थिती को गंभीर बनाता है ।